ओ३म्

ओ३म्

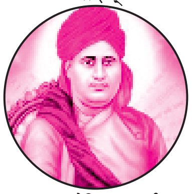

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 08
माघ शुक्ल चतुर्थी
विक्रम संवत् 2074
कलि संवत् 5118
21 जनवरी 2018 से 05 फरवरी 2018
दयानन्दाब्द : 193
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,118
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018 । मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

प्रधान किशनलाल गहलोत, भव्य भवन, आर्य विद्वान् वेदप्रकाश श्रोत्रिय, मूर्धन्य विद्वान् सत्यानन्द वेदवागीश, रामनारायण शास्त्री एवं उपस्थित आर्यजन समूह

यह अंक आर्य समाज सूरसागर, जोधपुर के सौजन्य से प्रकाशित किया जा रहा है।
सम्पादक मण्डल आर्य समाज सूरसागर, जोधपुर के समस्त पदाधिकारियों का एतदर्थ धन्यवाद ज्ञापित करता है।

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

सभा अधिकारियों द्वारा आर्य समाजों का निरीक्षण

आर्य समाज फलोदी, जोधपुर ! दिनांक 24.12.2017 से 30.12.2017 तक फलोदी नगर के शिवसर तालाब रोड़ दर्जियों की बगीची में आर्यवीर दल राजस्थान का प्रान्तीय शीतकालीन शिविर सम्पन्न हुआ, नौनिहालों को वैदिक संस्कारों के पल्लवन दृष्टि से यह शिविर प्रभावी एवं सफल रहा ।

शिविर समापन अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सेवाराम आर्य , सदस्य हेमसिंह जी परिहार , मदन लाल जी तंवर संरक्षक आर्य समाज पाणिनि नगर, जोधपुर से फलोदी पहुँचे । यहाँ सरदारपुरा क्षेत्र में आर्य समाज की जगह है जिसकी चार दीवारी हमारे पूर्व पदाधिकारियों द्वारा दशकों पूर्व करवा दी गई है । यह स्थल आर्य समाज की गतिविधियों के संचालन के लिए राजा के शासन व्यवस्था में ही पंजीकृत किया गया था । समयान्तर के साथ वहाँ बच्चे खेलने लगे वर्षों इसी क्रम के चलते वहाँ संघ के लोगों ने खेल को शाखा का रुप दे दिया । और आज आर्य समाज के अस्तित्व को नकार स्वयं की निजी सम्पति होने का भ्रम पाले बैठे है। वर्तमान में तथाकथित संध चालक जयराम इसे अपनी वर्षो की तपस्या का फल प्रदर्शित करता है। जब की इस भूमि का पट्टा आज आर्य समाज के नाम है। वह इसे शाखा मन्दिर के नाम से लिखता है। सभा के उक्त अधिकारियों के साथ – सदस्य देवेन्द्र शास्त्री , यतीन्द्र शास्त्री , अंकुश आर्य , कौशल आर्य , भागचन्द आर्य स्थानीय कार्यकर्ता पदाधिकारी महाशय चुन्नीलाल आर्य, चम्पालाल आर्य , रामकिशोर आर्य , लक्ष्मण आर्य , महेन्द्र आर्य आदि ने आर्यवीरों एवं शिक्षकों के साथ इस आर्य समाज स्थल का भ्रमण एवं निरीक्षण किया ,उद्घोष किया , जलपान किया । सभा अधिकारियों ने स्थानीय अधिकारियों से सम्बन्धित फाईल फोटोप्रति प्राप्त की तथा आर्य समाज स्थल में यज्ञशाला निर्माण के लिए प्रयास करना प्रारम्भ कर दिया ताकि गतिविधियाँ नियमित की जा सके ।

आर्य वीर दल प्रान्तीय शिविर फलोदी में मुख्य व्यायाम शिक्षक श्री भागचन्द आर्य का वैदिक रीति से जन्मदिन आर्य वीरों अधिकारियों कार्यकर्ताओं द्वारा मनाया गया । इस विधि से जन्मदिन मनाने के लिए इच्छुक व्यक्ति संगठन सहमंत्री श्री अंकुश आर्य से संपर्क कर सकते हैं।
संपर्क 9887889707

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

आर्यसमाज सूरसागर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सूरसागर का चार दिवसीय वार्षिकोत्सव गुरुवार २८ दिसम्बर से रविवार ३१ दिसम्बर २०१७ तक मनाया गया। समाज के मंत्री श्री सोमेन्द्रसिंह गहलोत ने बताया कि इन चार दिनों में प्रातः ७ः बजे से ११ बजे तक एवं सायंकाल ११ बजे तक कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें आर्यजगत के अनुभवी एवं प्रबुद्ध भजनोपदेशक श्री नरदेव जी, भरतपुर के ओजस्वी, हृदयस्पर्शी भजनोपदेश के साथ आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश, डॉ0 रामनारायण जी शास्त्री तथा श्री वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय, दिल्ली के मुखारविन्द से शास्त्रीय प्रमाणों से युक्त ज्ञानवर्द्धक व्याख्यान हुए। कार्यक्रम के अंतिम दिन भजनोपदेशक श्री नरदेव जी, भरतपुर ने मन के स्वरूप, कार्य और इसे नियंत्रित करने के उपायों पर भजनोपदेश के माध्यम से सुन्दर चर्चा की और बीच बीच में शिक्षाप्रद और रोचक दृष्टांत सुनाएँ। श्री वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय ने अपने हृदयस्पर्शी संबोधन में महर्षि दयानन्द सरस्वती की विद्वता, दिव्य काया और क्षमता, उनके हृदय में छुपी समाज की पीड़ा, उनके ज्ञान, विधवाओं सहित महिलाओं और जीवमात्र पर उनकी करुणा दर्शाने वाली उनके जीवन की घटनाओं से श्रोताओं के मन को झकझोर दिया। आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में सत्यार्थप्रकाश को पाँचवाँ वेद बताते हुए सत्य के प्रकाश, पाप–पाखण्ड के नाश और मानवमात्र के कल्याण के लिए इसे अत्यधिक उपयोगी बताया। आचार्य जी ने गजानन की उत्पत्ति की पौराणिक गप्प से श्रोताओं को अवगत कराते हुए गणेश चतुर्थी से अनन्त चतुर्दशी तक होने वाले गणेश उत्सव सहित सभी प्रकार के पाखण्ड छोड़ने का आह्वान किया। अंतिम चरण में प्रतिभावान बालिकाओं, कर्मठ आर्यवीरों और सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 रामनारायण शास्त्री एवं मन्त्री श्री सोमेन्द्र आर्य ने किया। समाज के प्रधान आर्य किशनलाल गहलोत ने विद्वानों का आभार व्यक्त करते हुए श्रोताओं, कार्यकर्ताओं और सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। ध्वजावतरण के बाद समस्त आगन्तुकों ने ऋषिलंगर का आनन्द लिया।

आर्यसमाज सूरसागर के वार्षिकोत्सव में श्री वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय द्वारा उद्धृत प्रसंग१ः स्वामी अच्युतानन्द जी पौराणिक सन्यासी थे। महर्षि दयानन्द के घोर विरोधी। एक बार निश्चय किया कि महर्षि दयानन्द से शास्त्रार्थ करने जाऊँगा। गाजे बाजे के साथ जुलूस लेकर महर्षि के सामने शास्त्रार्थ करने पहुँचे। जब महर्षि के दर्शन किए तो वेद विद्या और ईश भक्ति से सम्पन्न महर्षि के तेजोमय मुख को देखते रह गए। जुलूस और गाजे बाजों को वापस भेज दिया। बोलेः मैं अपनी पौराणिक पीठ वापस नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं तो दयानन्द का हो गया हूँ। कहाँ महर्षि अकेले नहीं थे। वेदानन्द और सच्चिदानन्द को पाकर उनके मुख पर नूर था।

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१३ व १४ जनवरी को प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक १३ जनवरी को देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से पधारे मूर्धन्य विद्वानों ने ''उपनिषदों में विविध विद्याएँ'' विषय पर सम्पन्न राष्ट्रीय वैदिक शोधसंगोष्ठी में अपने विचार प्रस्तुत किये। संगोष्ठी में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो– शारदा व पंकज कुमार मिश्र आदि ५० विद्वान् सम्मिलित हुए। वहीं १४ जनवरी को मकर सौर संक्रान्ति के पावन पर्व पर नए ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुलीय छात्रों ने शारीरिक बलप्रदर्शन व आश्चर्यचकित कर देने वाले आसनों का प्रदर्शन मल्लखम्भ पर किया। गुरुकुल के कुलाध्यक्ष पूज्य श्री स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज ने कहा कि– ''उपनिषदों में मधु एवं माधवी दोनों विद्याएँ हैं'', मधु अर्थात् स्नेह, जब यह स्नेह गुरु का शिष्य के प्रति होता है तो वह मधुविद्या और वही स्नेह जब शिष्य का गुरु के प्रति होता है तो वह माधवीविद्या है और यह स्नेह आज भी गुरु और शिष्य के मध्य अत्यावश्यक है। साथ पूज्य गुरुजी का कहना है कि ''उत्सव लोगों के परस्पर मेल का स्थल है तथा आज यह मेलभाव देश की अखण्डता व अस्मिता को बनाए रखने के लिए अत्यावश्यक है।'' शीत का अत्यन्त प्रकोप होते हुए भी जनता की उपस्थिति दर्शनीय थी। शान्तिपाठ के साथ उत्सव सम्पन्न हुआ।

कार्यालय सूचना

प्रधान / मंत्री जी

समस्त आर्य समाज अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान , वित्त वर्ष 1 अप्रेल 2017 से 31 मार्च 2018 का दशाशं , निश्चित कोटि, एवं आर्य मार्तण्ड , शुल्क निर्धारित प्रपत्र (वार्षिक मानचित्र) में भरकर 15.4.2018 तक अवश्य ही सभा कार्यालय को भेज देवें । निर्धारित प्रपत्र आगामी मार्तण्ड के अंको मे प्रकाशित किया जायेगा तथा सम्बन्धित आर्य समाज को डाक द्वारा प्रेषित किया जायेगा । साथ ही यह भी संसूचनीय है कि जिन संस्थाओं द्वारा राशि सीधे बैंक में चैक , डी.डी या स्थानान्तरित कर जमा करवाई जाती है वे जमा पर्ची भेज कार्यालय से रसीद अवश्य प्राप्त कर लें ।

जिनको विगत वर्ष की बैंक में जमा राशि की रसीद कारण वश प्राप्त नहीं हुई वे भी सूचना देकर या कार्यालय फोन 0141–2621879 पर सूचना अवश्य देवें ।

आर्य वीर दल राजस्थान का प्रान्तीय शिविर फलोदी में सम्पन्न, नशामुक्ति अभियान एवं यज्ञोपवीत संस्कार आयोजित

आर्य समाज की युवा इकाई आर्यवीर दल राजस्थान का प्रांतीय योग व्यायाम प्रशिक्षण व चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन शीतकालीन अवकाश में 24 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2017 तक फलोदी स्थित दर्जियों की बगेची में हुआ।

शिविर संयोजक चुन्नीलाल आर्य ने बताया कि 7 दिवसीय आवासीय शिविर में जोधपुर , जैसलमेर , बाडमेंर , नागौर, श्री गंगानगर ,अजमेर , जयपुर, भीलवाडा , उदयपुर, चितौडगढ, सवाईमाधोपुर, बांसवाडा आदि जिलों से 80 आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के उद्‌घाटन समारोह में स्थानीय विधायक पब्बाराम विश्नोई मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए उन्होने कहा कि जीवन को सफल बनाने व सही तरीके से जीने के लिए शिक्षा व संस्कार दोनों ही जरूरी है।उन्होने कहा कि स्वामी दयानन्द ने वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए आर्यवीर दल की स्थापना की थी। आर्यवीर दल के प्रांतीय मंत्री भवदेव शास्त्री द्वारा संगठन का परिचय देते हुए संस्कृति रक्षा , शक्ति संचय तथा सेवा कार्य पर विशेष मार्ग दर्शन दिया । शिविर के प्रधान शिक्षक यतीन्द्र शास्त्री के मार्ग दर्शन में योगासन , प्राणायम, ध्यान,सर्वांगसुन्दर , व्यायाम , दण्ड बैठक , सूर्यनमस्कार , भूमि नमस्कार,लाठी, भाला , तलवार, जुडो कराटे, रस्सा मलखंभ , पिरामिड , कमांडो सलामी , परेड तथा साहसिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत आर्यवीर जोश उत्साह , उमंग व शौर्य युक्त होकर प्रशिक्षण प्राप्त किया । शिविर के बौद्धिक प्रमुख व प्रांतीय सहमंत्री अंकुश आर्य ने विभिन्न सत्रो में सत्संगति , अनुशासन ,ब्रह्मचर्य तथा राष्ट्रभक्ति विषयों पर आर्यवीरों को प्रेरित किया। प्रांत प्रचार मंत्री विमल शास्त्री जोधपुर ने संध्या हवन के भक्तिमय आध्यात्मिक सत्र में ईश्वर के स्वरूप की व्याख्या करते हुए उसकी उपासना का संदेश दिया । यज्ञ में आहुति देते हुए 57 आर्यवीरों का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ । प्रांत के कार्यकारी संचालक देवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञोपवीत के तीन सूत्र पितृ ऋण , ऋषि ऋण व आचार्य ऋण से उऋण होने पर प्रकाश डाला । जैसलमेर के संचालक एवं शिविर के प्रतियोगिता प्रमुख गगेन्द्रसिंह आर्य ने महापुरूष नाम स्मरण , आशु भाषण ,प्रश्नोतरी,अन्ताक्षरी,चित्रकला आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया। प्रान्त के मुख्य शिक्षक भागचन्द आर्य, व्यायाम शिक्षक कौशल आर्य , दिनेश आर्य , जितेन्द्र आर्य , सनी आर्य आदि ने प्रशिक्षण प्रदान किया । शिविर के सहसंयोजक चम्पालाल आर्य ने बताया कि शिविर का समापन रा.उ.मा. विद्यालय फलोदी में आयोजित हुआ। इससे पूर्व नशा मुक्ति रैली का आयोजन मुख्य बाजार से किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि सभापति कमला थानवी ने पुरष्कार वितरण व भामाशाह समान समारोह में सभी को शुभकामनाएँ दी। शिविर के आयोजन में राम किशोर आर्य व लक्ष्मण गोयल का विशेष रूप से सहयोग रहा ।श्रेष्ठ आर्यवीरों को पतजंलि उत्पाद प्रदान किये गए ।सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र व महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र प्रदान किये गए। आर्यवीरों को प्रतिदिन रात्रिकालीन सत्र में बडी स्क्रीन पर महापुरूषों की जीवनी दिखाई गई।

गगेन्द्र आर्य
जिला संचालक जैसलमेर

आर्य समाज महामंदिर में दिया गया यज्ञ का प्रशिक्षण

आर्य समाज महामंदिर एवमं क्रांतिकारी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल व्यायामशाला पावटा सी रोड के तत्वावधान में यज्ञ एवमं बौद्धिक ज्ञान प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर का संचालन वरिष्ठ आर्यवीर सेवाराम जी आर्य के द्वारा यज्ञ के मंत्रों का उच्चारण एवमं अक्षर ज्ञान कराया गया। शाखा के प्रधान हेमसिंह जी आर्य ने बताया कि बच्चों के शीतकालीन अवकाश को ध्यान में रखते हुई इस निःशुल्क शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमे वैदिक संस्कृति का प्रचार – प्रसार हो। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आर्य समाज महामंदिर सदैव अग्रसर रहता है। प्रचार मंत्री प्रदीप जी आर्य ने बताया कि शिविर के समापन मे बच्चों को पुरस्कार देकर समानित किया गया। इस अवसर पर शाखा के आर्यवीर अमृतलाल बेरवाल, सुनील, रमेश, राहुल, समुन्द्र, विक्रम, पायल आर्य आदि उपस्थित थे।

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

आपके विचार ही आपकी समृद्धि का माध्यम है।
(यज्ञ एवं प्रबन्ध)

विषय – अर्थ एवं प्रबन्धन के बिना सब अनर्थ

दुनिया में जो भी कुछ देख रहे है। वह आपस में जुड़ा हुआ है। वस्तुएं भी विचार का जरिया है। जैसे संपति का जरिया इंसान की बुद्धि को ही बताया है। विद्वानों ने भी कहा था विचार अन्तरिज्ञ (स्पेस) से आते है। सुनने में यह बात असंभव लगती है। इस पर भरोसा नहीं होता। लेकिन यह सच है। जब कोई विचार आपके मस्तिष्क में आता है। तो आप उसे जाहिर करने के लिए भौतिक जरीया ढूंढते है। इस तरह आपकी कल्पनाएँ प्रोडक्शन मोड में आ जाती है। यानी आप उसे बनाना चाहते है, या सच होते देखना चाहते है। यही इस बात का भी रहस्य है कि आप जो चाहते है, उसे पा सकते है विद्वान लोग कहते है कि कोई भी चीज पहले विचार यानी अभौतिक अवस्था में होती है। बाद में उसे भौतिक आकार दिया जाता है। बीमारियों के बीच में स्वयं को स्वस्थ महसूस करना या गरीबी के बीच में स्वयं को अमीर महसूस करना, इसके लिए विचारों की शक्ति की जरूरत होती है। लेकिन जो यह शक्ति हासिल कर लेता है वह अपनी किस्मत से लड़ सकता है। वह सब कुछ हासिल कर सकता है जो चाहता है।

प्रकृति स्वयं को जाहिर करती है नया रूप लेती है बदलती है, विकसित होती है। यह एक यूर्निवर्सल फैक्ट (सत्य) है, जो सभी मानते है। यही बात ईंसान पर भी लागू होती है उसे और चाहिए होता है। वह बदलता है। अमीर बनने की इच्छा रखता है। प्रगति चाहता है। इसलिए बदलाव के बारे में सोचता एक तरह से प्रकृति के साथ तालमेल बैठाता है। लोग संपति इसलिये चाहते है। ताकि अपने उद्देश्यों की पूरा कर सकें, अपने दिमाग को विकसित कर सके, यात्राएँ कर सके, दुनिया की खूबसूरती को देख सकें, जो कुछ हासिल किया है, उसे दूसरों को दे सके।

विद्वान लोग कहते है कि जिस तत्व से यह ब्रह्माण्ड बना है, वह सभी लोगों में समान रूप से मौजूद है, इसलिए किसी को भी डरने की जरूरत नहीं है। सभी को अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रयास करना चाहिए।

विद्वान लोग कहते है कि आप अपनी रचनात्मकता को बाहर लाने का सबसे अच्छा तरीका है–जो आप के पास है उसके प्रति कृतज्ञता रखना। प्रकृति प्रचुरता लिए है। यह उसे पुरस्कृत करती है। जो लगातार उसके प्रति कृतज्ञता का भाव रखता है। जब आप प्रकृति यानी सभी चीजों की रचना करने वाली शक्ति का सम्मान करते हैं। तो वह आपकी मनचाही चीज आपकों देती है। आप अपना समय व्यर्थ की आलोचनाएँ करने में न बिताएँ, आप अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए आपको पैसों की जरूरत होते है। अगर आप किताब पढ़ना चाहते है तो उसे खरीदने के लिए भी आपको पैसों की जरूरत होगी। जब आप अपनी मनपंसद चीजों को अपने पास रख सकेंगे तो सकारात्मक विचार सहजता से आएँगे जब आप ऊँचाई पर पहुँच जाते हैं, तो वहां खड़े रहने के लिए आपको ज्यादा मेहनत करनी होती है। काम अपमानजनक नहीं होते, अपमानजनक तो निष्क्रियता होती है। किसी भी काम को व्यवस्थित तरीके से करना सबसे अच्छा माना जाता है, लेकिन हम ईंसान है और अव्यवस्था हमारी सबसे बड़ी दुश्मन है हम सब आर्य है आर्य का मतलब श्रेष्ठ है, श्रेष्ठ वो है जो अपने व दूसरों के बारे में सोचता है। श्रेष्ठ व्यक्ति वह जो श्रेष्ठ को अपने साथ रखता है। श्रेष्ठ वह जो भवनाओं पर नियंत्रण रखता है।

इन विचारों को आपके सामने रखने का उद्देश्य यही है कि आज हमें भी आर्य समाज में बड़े बदलाव लाने की आवश्यकता है हमें भी समय एवं परिस्थितियों के साथ चलने की आवश्यकता है। हमें भी अपने आर्य समाज के आय के स्त्रोतों को बढ़ाने की आवश्यकता है। क्योंकि हम लोग बहुत सारे कार्य को अंजाम देना चाहते है। हमारे पास भी बड़ी योजनायें है। लेकिन कम आय अनुचित प्रबन्धन तथा कुशल नेतृत्व तथा प्रशासन के अभाव के कारण हम उन्नति की ओर नही जा पाते उन आर्य समाज को सभांलने वाला आज कोई नही है।

इसलिए परत्मात्मा ने हमें भी बुद्धि दी है। हम लोग रोज गायत्री मंत्र का जाप करते है लेकिन हम अपनी बुद्धियों का उपयोग नही कर रहे है। आप लोग सोचते होंगे आर्य समाज का काम पैसा कमाना नही है लेकिन एक विद्वान ने युवा निर्माण शिविर के अन्तर्गत हमें बताया कि पैसा कोई जरूरी नही है लेकिन पैसों के बिना भी काम चलने वाला नही है। क्रान्तिकारीयों ने भी राष्ट्रहित रक्षा के लिए जब धन की आवश्यकता थी तो अंग्रेजी सरकार के खजाने को लुटा था। शायद आप सबको विदित होगा। आज हमें भी इस संकीर्ण मानसिकता से बाहर आने की आवश्यकता है। आज हमारे आर्य समाज के विचारों को लेकर बहुत सारी व्यक्तिगत संस्थाये हमारे से कई गुणा युवाप्रबन्धन एवम् नेतृत्व तथा पैसों के मामलों में हमसें आगे निकल गई है। हमें भी युवाओं को जोड़ने के लिए रोजागार जैसे पाठ्यक्रमों को अपने आर्य समाज में संचालित कर सकते है। उनके लिए वो सारी व्यवस्थाये करनी पड़ेगी, जो उनको चाहिए एक पिता भी अपने पुत्र की सारी इच्छायें पूरी करता इसलिए की आगे चलकर वृद्धा अवस्था में पिता की इच्छायें पूरी करेगा। ताली दोनों हाथ से बजती है। आज हमें भी दूसरे मतपन्थों एवं संस्थाओं से प्रबन्धन नेतृत्व एवं प्रशासन सीखने की आवश्यकता है। आज आर्य समाज से जुडे हुए युवाओं की आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ेगा, जो गृहस्थी है उनकी आवश्यकता की भी पूर्ति करनी

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

पड़ेगी, वानप्रस्थियों एवं सन्यासियों की आवश्यकता की पूर्ति करनी पड़ेगी। तभी ये आर्य समाज निरन्तर उन्नति की ओर बढ़ता रहेगा और अपने लक्ष्य एवम् उदेश्यों को प्राप्त कर सकेगा। चैन से सोना चाहते हो तो जागना पड़ेगा। बदलना है एवं बदलाव लाना पड़ेगा।

जिस प्रकार से ईसाई एवं इस्लाम धर्म के लोग, अन्य धर्म के लोगों को जोड़ने के लिए उनको रोजगार देते, मकान बनाकर देते है, उनके बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करते है। इन सारी आर्य विचार धाराओं का अपना कर दूसरे धर्म के लोग हमसे कई गुणा प्रचारतंत्र, प्रबन्धन एवं नेतृत्त्व में आगे निकल गये हैं। हमें भी सोचने पर मजबूर कर दिया है। आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द जी ने संसार का उपकार करने के लिए बनाई गयी। लेकिन हम लोग उपकार करने की बजाय उपकार लेने लग गये। जिससे इस आर्य समाज की उन्नति के बजाय रसातल की ओर ले जा रहे है। इसका दोष वर्तमान में इन सब आर्य समाज के पदाधिकारियों की संकीर्ण मानसिकता के कारण हो रहा है। हम किसी ओर को दोषी नही ठहरा सकते। जैसे – धर्म को धर्म के ठेकेदारों से खतरा है, खजानें को पहरेदारों से खतरा है। इसी प्रकार आर्य समाज को आर्यसमाजियों से खतरा है। बिना आर्थिक उन्नति, उचित प्रबन्धन के हमें लोग सामाजिक उन्नति नही कर सकते हैं। वृक्ष कभी इस बात पर व्यथित नहीं होता कि उसने कितने पुष्प खो दिए, वह सदैव नए फूलों के सृजन में व्यस्त रहता है। जीवन में कितना कुछ खो गया। उस पीड़ा को भूल कर, क्या कर सकते हैं, इसी में जीवन की सार्थकता है। आज हमें संकल्प लेने की आवश्यकता है। तुमने चाहा ही नही वरना हालात बदल सकते थे। मेरे आंसू तेरी आँखों से निकल सकते थे। तुम तो ठहरे ही रहे झील के पानी की तरह, दरिया बनते तो बहुत दूर तक निकल सकते थे।

अगर आप इन विचारों से सहमत है तो मुझे इस फोन नम्बर 9983881001 पर अपनी प्रतिक्रिया जरूर दें।

(ये लेखक के निजि विचार हैं।)

प्रदीप आर्य

(आर्य समाज) म्हामंदिर

कार्यालय जिला आर्य प्रतिनिधि सभा भीलवाड़ा (राज.)

वेद प्रचार कार्यक्रम

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा भीलवाड़ा के द्वारा वेद प्रचार एवं सत्संग का कार्यक्रम आर्य भजनोपदेशक श्री कुवर भूपेन्द्र सिंह जी एवं श्री लेखराज जी शर्मा के द्वारा दिनांक 19.11.2017 से 21.11.2017 तक बनेड़ा तहसील में आर्य उप प्रतिनिधि सभा के संरक्षक श्री गणपत लाल जी आर्य के तत्त्ववाधान में रायला ग्राम नवग्रह आश्रम, एवं राजकीय बालक / बालिका विद्यालय में वेद प्रचार एवं छात्रों के चरित्र निर्माण सम्बन्धी प्रवचन एवं यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ।

सर्व प्रथम दिनांक 23.11.2017 को शाहपुरा से सरोवर यज्ञ शाला एवं ग्राम कल्याणपुरा, दिनांक 24.11.17 को स्वामी विवेकानन्द मांडल विद्यालय शाहपुरा में, दिनांक 25.11.2017 को श्री रतनलाल जी मुन्दड़ा के, दिनांक 26.11.2017 को आर्य समाज शाहपुरा, दिनांक 3.12.2017 को श्री महावीर जी कम्पाउडर सा. के पुत्र के विवाह, दिनांक 5.12.2017 को संतोग सिंह जी चौधरी के जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन , दिनाक 10.12.2017 को स्वर्गीय मदनमोहन जी सुगन्धी की पूण्य स्मृति में साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन चरित्र निर्माण एवं सत्यार्थ प्रकाश तथा पंचमहायज्ञो का महत्व समझाया।

कन्हैयालाल आर्य

प्रधान जिला सभा

शोक संदेश

आर्य समाज महामंदिर जोधपुर के प्रधान एवं प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य श्री हेम सिंह जी के पिता श्री किशन जी का असामयिक निधन दिनांक 7.1.2018 को हो गया श्री किशन जी का जन्म 1 अगस्त 1939 को जोधपुर में हुआ। आपके पिताजी श्री अमराराम जी ने श्री किशन जी के बाल्यकाल में ही घर छोड़कर सन्यास आश्रम धारण कर लिया।

श्री किशन जी रेल्वे में निम्न पद गेटमैन के तौर पर गौरवमयी सेवा करके 1997 में सेवानिवृत हुए। आपने संषर्घ के साथ तीन पुत्रियों व 2 पुत्रों को शिक्षा दीक्षा प्रदान करके उनकी शादियाँ करके अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। अपने दोनों पुत्र श्री हेमसिंह जी व दिलीप जी को बचपन से ही आर्य समाज आर्य वीर दल से जोड़कर सुंस्कारित बनाया। आपका पूरा परिवार सदा ही आर्य समाज के साथ–सामाजिक कार्यों में बढ़–चढकर भाग लेता रहा है।

- जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता; ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। – एकादश समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

महावीर नगर कोटा में आर्य समाज का कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ

आशा की किरण आर्य वीर दल

आर्य वीर दल राजस्थान के प्रान्तीय सहमंत्री अंकुश आर्य ने भीलवाड़ा हिण्डोन सिटी में प्रारम्भ करवाई शाखाएँ गंगापुर सिटी में कार्यकर्ताओं की बैठक कर सगठन को सुदृढ़ करने की तैयार की योजना आगामी महिनों में और प्रारम्भ की जायेगी शाखाएँ

आर्य वीर दल, भीलवाडा ने मनाया मकर संक्राति पर्व ।

- परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।

— सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वाज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने दूकान या परिसर खाली कराने अथवा किरायेदार बदलने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है। किराया, घटाने व बढ़ाने की सूचना से सभा कार्यालय को समय पर अवश्य अवगत करायें

आगामी कार्यक्रम

समस्त आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थान उत्साह के साथ आयोजित करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10) – 10 फरवरी, 2018 (शनिवार)

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की सूचनार्थ है कि हम सबके प्रेरणास्रोत आर्यसमाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस** इस वर्ष **10 फरवरी** को है। भारत सरकार की ओर इस दिन एच्छिक अवकाश घोषित है तथा कुछ राज्यों में राजपत्रित अवकाश भी है। अतः आप सबसे प्रार्थना है कि आप इसके आयोजन की तैयारियां अभी से आरम्भ कर दें। इस दिन **सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा/ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या** आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमन्त्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र, महर्षि दयानन्द जीवनी आदि का वितरण करें

– महामन्त्री

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषकः–
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर–302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।